लहरें और महासागर हम सभी समुद्र पर लहरों की तरह हैं। एक पल के लिए मिलते हैं और दूसरे में प्रस्थान करते हैं। अनंत की तुलना में कुछ वर्षों की एक छोटी अवधि क्या है! लहरों और लहरों के बीच कोई संबंध नहीं है! एक लहर का संबंध महासागर के साथ है! इसी तरह हम एक दूसरे से संबंधित नहीं हैं। हमारे सभी संबंध एक सर्वोच्च व्यक्तित्व, भगवान के साथ हैं। दो अपूर्ण आत्माओं (माया के तहत आत्माओं) के बीच कोई प्यार नहीं हो सकता है। आत्मा प्यार के महासागर में है लेकिन इसके अनुभव से रहित है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

"पानी, पानी हर जगह पीने के लिए एक बूंद नहीं है!" या "पानी बीच मीन पियासी सुनी सुनी आवती हाँसी।" यह हमारी हालत है। अनंत सुख के सागर में डूबे रहने पर भी ये जीव अशंत, अतृप्त, दुःखी है। आइए हम आनंद सिंधु परमेश्वर पर ध्यान केंद्रित करें। दूसरों से प्यार करने की मायावी सोच से बाहर आएं। यह किसी की भी क्षमता से परे है। सच्चा प्यार? यह केवल भगवान और संतों के पास है!

आइए हम अपना लक्ष्य ठीक तरह से निश्चित करें। समस्या स्पष्ट रहें। समस्या की गलत परिभाषा ने सभी पिछले जीवन से अभी तक कहर बरकरार रखा है। एक ही गलती को बार बार दोहराया नहीं जाना चाहिए। हमे अनंत जीवन, अनंत ज्ञान एवं अनंत सुख चाहिए। ये हमारी समस्या है। इसका समाधान भगवान के मिलन से ही होगा। इसी जीवन में भगवान को मिलने का और उसके प्यार को अनुभव करने का संकल्प लें। आप जो कुछ भी है, आपके पास जो कुछ भी है, चाहे जितनी कोशिश करो फिर भी, एक दिन जब आप मर जाते हैं तो आपको सबकुछ छोड़ना होगा। सभी रिश्ते, नाते, गर्व, धन, प्रतिष्ठा, शिक्षा, कौशल, प्रसिद्धि, संबंध ... सब कुछ! अब इसे क्यों चिपकाना है? चलो इसी जीवन में हम हमारा काम बना लें!